International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 4; July 2018; Page No. 23-24

प्रणामी परमधाम : स्वरुप और सामयिकी

प्रो॰ राज कुमार लहरे
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी), शासकीय पी॰ डी॰ वाणिज्य एवं कला महाविद्यालय, रायगढ, छत्तीसगढ़, भारत।

प्रस्तावना

महाराज देवचंद्र जी प्रवर्तित तथा स्वामी प्राणनाथ जी द्वारा प्रसारित प्रणामी धर्म (परमधाम) मूलतः शांति, सत्य, सेवा और सादगी पर आधारित मानव जीवनशैली है। जहॉ सर्व धर्म समभाव मानवधर्म को स्वीकारा है। धर्म, सम्प्रदाय, वर्ग, कुल, वंश, जाति से परे आत्मा–परमात्मा का स्वरुप– प्रेम, अहिंसा, करुणा, मैत्री, त्याग तथा सादगीपूर्ण व्यवहार के प्रसारार्थ जागनी रास, चर्चनी, खुलासा, तपस्यामय जीवनचर्या, दुःख का विवेकपूर्ण समाधान तथा तारतम वाणी के माध्यम से प्रसार करते हुए आत्मा को ही परमधाम माना। परम उद्देश्य के लिए भाव व कर्म का मणिकांचन योग, ध्यान, अवबोध, संयमित संस्कृति तथा शुध्दाचरण से संतत्व पद पर आसीन; इन्हीं दीक्षितों को धामी कहते हैं। प्रणामीधाम में ज्ञान और प्रेम के योग ही सर्वोच्च शिखर (परमपद) होता है। जहॉ जीव आवागमन त्याग परमधाम में ब्रम्हानंद का रसपान करता है। धामी अनुशासन के साथ ''सादा जीवन उच्च विचार'' पर विस्वास करते हुए सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय के लिए शांतिमय निष्काम सेवा और विश्वबंधुत्व का संदेश देते हैं। जो प्रणामीधाम के प्रमुख ग्रंथों– रास, प्रकाश, षटऋतु, कलश, सनंध, किरन्तन, खुलासा, खिलवत, परिक्रमा, सागर, श्रृंगार, सिन्धी, मारफत सागर, कयामतनामा में धाम के मूल भाव सविस्तार सन्निहित है। आज प्रणामियों ने ब्रम्ह के निर्गुण–सगुण, ज्ञान–प्रेम के मध्यम स्वरुप को स्वीकार गुरु–परम्परा का निवर्हन करते हुए, कर्त्तव्य–पथ पर उत्तरोत्तर अग्रसर है।

इसी का एक धाम राधा–कृष्ण प्रणामी मंदिर जिला रायगढ (छत्तीसगढ़) में अवस्थित है। जहाँ वर्ष पर्यन्त विविध आयोजन के साथ सद्गुरुओं द्वारा ज्ञान प्रसारित होता है तथा अनुयायी (सेवाव्रती) परमधाम में निमग्न रहते हैं। परमधाम निर्माण में परमधामी दानवीर ठाकुर नारायण सिंह जी ने जमीन समर्पित किया। इसी तरह श्रीकृष्ण प्रणामी साधनालय, रायगढ़ स्थित है; यहाँ साधक मनोयोग से साधनारत हैं। वर्तमान में परम श्रद्धेय गुरुवर श्री महेन्द्र महराज जी गद्दीनशीन सुशोभित है। ये जिला में आज एक प्रमुख दर्शनीय स्थल है।

इतिहास

देवचंद्र महाराज (1581–1655) का जन्म सिंध प्रांत के उमरकोट (गुजरात) में हुआ। बाल्यकाल में ही उनमें संत प्रवृति देखी गई। सोलह बरस के उम्र में वे संसार को त्याग ब्रम्हज्ञान के खोज में भुज और जामनगर निकल पड़े। देवचंद्र ने धर्म की एक नई धारा, जिसे श्रीकृष्ण धर्म, निजानंद या परनामी सम्प्रदाय कहा, को खोजने और ठोस रुप देने का कार्य किया। वह जामनगर आकर बस गये, जहाँ उन्होंने धार्मिक मतभेद और सामसजिक वर्ग के असम्मानीय व्यक्तियों के लिए सरल भाषा में सुगम तरीके से वेद, वेदांग–ज्ञान और भगवतम की व्याख्या रची तथा उन्हें तारतम सिखाया। उनके अनुयायियों को बाद में सुन्दर साथ या प्रणामी कहा जाने लगा। धर्म का प्रसार का श्रेय योग्य शिष्य व उत्तराधिकारी महामती प्राणनाथ जी (महाराज ठाकुर 1618–1694) को जाता है। उन्होंने कुलजम और मेहर सागर कृति रची। पन्ना महराजा छत्रसाल तथा भतीजे देवकरण जी शिष्य थे। महात्मा गाँधी जी के माता पुतली बाई इस सम्प्रदाय से थी।

प्रणामी परमधाम स्वरुप

प्रणामी सम्प्रदाय अथवा परिणामी सम्प्रदाय वैष्णवों का एक उप सम्प्रदाय तथा सनातन है। सनातन का अर्थ है– जो शाश्वत हो, सदा के लिए हो, जैसेः– सत्य सनातन है, परमात्मा सत्य है, आत्मा सत्य है, अखण्ड मोक्ष सत्य है। मनुष्य का परम लक्ष्य उस सत्य का अवबोध कर प्राप्त करना है। उसी सत्य के मार्ग को बताने वाला प्रणामी सनातन धर्म है। जो वैज्ञानिक है क्योंकि यह धर्म तार्किक व व्यवहारिक है। किसी तरह से भेदभाव, उँचनीच, अंधविस्वास, आडम्बर, दिखावा नहीं है। इस धर्म का लक्ष्य सर्व धर्म समभाव (समन्वय) की भावना को जागृत करना है। इसके प्रवर्तक परिणामवादी वेदांती थे। भारत में इन्होंने कई प्रांतों में अपने मत का प्रचार–प्रसार किया। आज देश–विदेश तथा सम्पूर्ण भारत में इनके अनुयायी बड़ी संख्या में निवासरत हैं। जो कृष्णजी से सख्यभाव रखते हैं तथा मत प्रायः निम्बाकाचार्यों जैसा है। महामती श्रीराज जी को मुसलमानों का मेहदी, ईसाइयों का मसीहा और हिन्दुओं का कल्कि बुद्ध अवतार कहा जाता है। आज विश्व में अनेकों धर्म और सम्प्रदाय है; परन्तु उन सभी धर्मों और सम्प्रदायों के मूल में एक मात्र सनातन धर्म है। जो ऐकेश्वरवादी को मानता है। वेद में कहा है– 'एको ब्रम्ह द्वितीय नास्ती' अर्थात दूसरे शब्दों में कहा जाय मूल धर्म सनातन है– हिन्दू, मुस्लिम, सिख्ख, ईसाई, बौध्द, जैन, पारसी आदि सम्प्रदाय मात्र हैं। इसी तरह कुरान में भी है– 'ला ईलाह ईल ईल्लाह' वह अल्लाह एक ही है। आज बहुदेववाद, अवतारवाद, पैगम्बरों, तीर्थंकरों आदि के स्थान पर परमात्मा को स्थापित करना होगा। क्योंकि सर्वमान्य मत है कि वे परमात्मा की वाणी है, खुदा की आवाज है, परमेश्वर की कृपा है। वस्तुतः इन धर्मों में परमात्मा ने अपने अवतरण और ब्रम्ह विषयक गुढ़ रहस्यों को समय–समय पर फरिस्तों के माध्यम से अंकित कराया है तथा भविष्यवाणियाँ की है। जो अंततः सत्य धर्म की स्थापना करेंगे। इन्हीं वाणियों के अनुरुप महामती श्री प्राणनाथजी का प्रार्दुभाव सत्रहवीं सदी में हुआ। इनका मूल नाम मिहिर मिहिर का अर्थ संस्कृत और अरबी में सूर्य होता है। प्राणनाथजी के मुखारबिंद से जो ब्रम्हवाणी प्रसारित हुआ वह ''इलम ए लुटुन्नी' है। यह अखण्ड मोक्ष प्रदायनी है। तथा उनके द्वारा स्थापित धर्म संसार का वैमनस्य मिटाकर सत्य धर्म का

मार्ग प्रशस्त करता है–

''कलंक रहित सत धर्म आप्यो, ज्ञान खड्क लखि कलयुग कापयो।

निजानंद धर्म निष्कलंक को जो इह, जीव सकल को परमपद देहि। अर्थात निजानंद धर्म के आलावा कोई अलग धर्म नहीं। प्रणामी सम्प्रदाय में श्रीकृष्ण (श्रीराज) को आराध्य मानते हैं। तीर्थ स्थलों में नवतनपुरी, सूरत, पन्ना, दार्जिलिंग, इटावा, दिल्ली, प्रमुख स्थान है। इस सम्प्रदाय में जो तारतम ग्रंथ है, वो स्वयं परमात्मा की स्वरुप सखी इंद्रावती ने प्राणनाथ के रुप में जन्म लेकर लिखा। जिससे कुरान, बाइबल, भगवत आदि ग्रंथों के भेद खुले। प्रणामियों को ईश्वर ने ब्रम्ह आत्मा घोषित किया। अर्थात ब्रम्हात्मा के अंदर स्वयं परमात्मा का वास होता है और ये ब्रम्ह आत्माऐं परमधाम में श्रीराज और श्यामा महारानी के साथ गोपियों के रुप में रहती हैं। सबसे पहले परमात्मा का अवतरण अल्लाह के रुप में दूसरी बार बाल्यकाल में कृष्ण परमात्मा के अवतार थे और बाकी जीवन में विष्णु अवतार। सोलहवीं सदी में प्राणनाथ के रुप में जन्म लिया। इस सम्प्रदाय में बाल कष्ण को पूजा जाता है। कृष्ण तो एक मनुष्य रुप का नाम है कोई ईश्वर का नहीं।

श्रीकृष्ण प्रणामी धाम के उपदेश

1. श्रीकृष्ण जी ने मूलतः प्रेम का उपदेश दिया।
2. तारतम वाणी में श्रीराज–श्यामा के युगल रुप स्वीकार है।
3. देवचंद्र, प्राणनाथ निजानंद जी ने सत्य का मार्ग सिखाया है।
4. ये कुल्जाम तारतम वाणी ग्रंथ को स्वीकारते हैं।
5. वेद, उपनिषद्, भागवत–गीता, कुरान, बाइबल, गुरुवाणी तथा अन्य सभी धार्मिक ग्रंथों का समान रुप से आदर करते हैं।
6. ये सभी धर्म, सम्प्रदाय, वर्ग, जाति के शिक्षा को समान महत्व देते हैं।
7. किसी तरह से ऊँच–नीच, जाति–पाँति, रंग–रुप, आडम्बर, दिखावा, रुढ़िवाद आदि भेदभाव को नहीं मानते हैं।
8. धामी ईमानदार, मिलनसार, नशापान से दूर तथा शुद्ध शाकाहारी होते हैं।
9. नवतनपुरी (जामनगर) मंगलपुरी (सूरत) पद्मावतीपुरी (पन्ना) को प्रमुख पवित्र स्थान हैं।
10. परमधामी प्रणामजी सम्बोधित कर एक–दूसरे का सम्मान करते हैं।

पवित्र ग्रंथ

1. **तारतम सागर**–तारतम सागर प्राणनाथ जी द्वारा धर्म प्रचार–प्रसार के लिए दिए गये उपदेशों का संग्रह है जिसमें प्रणामी धर्म के सम्पूर्ण सिध्दांत तथा दर्शन समाविष्ट है। सभी ध्र्मों के पवित्र संकलन के कारण अनुयायी सम्प्रभु की तरह पूजा करते हैं।
2. **बीटक–** तारतम का इतिहास है। आत्मा को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाला सतगुरुजी देवचंन्द्र एवं प्राणनाथ जी का जीवनी है।
3. **वृति/चर्चाणी–** अक्षरातीत श्रीकृष्ण की चर्चा इस तरह से किया गया है–

चिदात्यिं किशोरांगं परेधान्मि विराजितम्।
स्वरुपं सच्चिदानन्दं निर्विकार सनातनम्।।
–ब्रम्हवैवर्त पुराण

4. **विराट।**

तीर्थ स्थल–

1. **जामनगर–** स्वामी देवचंद्र जी को यहाँ आत्म–ज्ञान प्राप्त हुआ था। आज भी खिजड़ा वृक्ष और मंदिर विद्यमान है।
2. **सूरत–** प्राणनाथजी को यहाँ गुरुगद्दी देकर स्वामी उपाधि से विभूषित किया। सैयदपुरा के इस संस्था को पाँच महा मंलपुरी धाम (मोटा मंदिर) के नाम से प्रसिध्द हुआ।
3. **पन्ना धाम–** प्राणनाथ जी छत्रसाल को शिष्य बनाया और एक श्री जी का झंडा फहराया। 11 साल तक निवास कर परमधाम के लिए महा प्रस्थान किया। यह आज पद्यावती धाम कहलाता है।
4. **दार्जिलिंग–** पश्चिम बंगाल में सबसे पवित्र व प्रसिध्द मंदिर स्वामी मंगलधाम के नाम से विख्यात है।
5. **इटावा–** निजानंद जी का एक विशाल श्री कृष्ण प्रणामी मंदिर परमानंद धाम के नाम से जाना जाता है।

संदर्भ

1. sri-krishna-pranami-dharma-a-400yearold-sect-is-a-libera
2. Pranami Faith : Saints of Pranami Dharma : Texts
3. Nijanad Sampradaya
4. The Pranami Faith: Beyond `Hindu' and `Muslim'-Dominique-Sila Khan
5. Vishava Pranami Dharma
6. Identity and religion: foundations of anti-Islamism in India by Amalendu Misra. Mohandas: A True Story of a Man, His People, and an Empire by Gandhi. The Agony of Arrival: Gandhi, the South Africa Years by Nagindas Sanghavi.
7. श्री कृष्ण प्रणामी धर्म
8. बीटक विमश